ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-२३
दिनांक- मंगलवार, २३ मार्च, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.4 एवं 17.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 86 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 43 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 22.0 एवं दोपहर में 31.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(24–28 मार्च, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 24–28 मार्च, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल आ सकते है। हलाकि मौसम के शुष्क बने रहने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान मे 2–3 डिग्री सेल्सियस की बढोत्तरी हो सकती है जिसके कारण यह अगले चार से पॉच दिनो मे 37 डिग्री सेल्सियस तक पहुॅच सकता है। न्यूनतम तापमान मे हल्की वृद्धि के साथ यह 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 14 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले चार दिनो तक पछिया हवा तथा उसके बाद एक दिन पुरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 50 से 60 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- मार्च–अप्रैल माह में थ्रिप्स कीट की संख्या अपने चरम पर पहुँच जाती है। इनकी समय पर रोक–थाम नहीं होने से फसल में रोग–व्याधि आ जाती है एवं उपज में काफी कमी आती हैं। इसे देखते हुए प्याज उत्पादक कृषक बन्धु फसल में थ्रिप्स कीट की रोक–थाम प्राथमिकता से करें। यह आकार में अतिसुक्ष्म होते हैं तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा–मेढा हो जाता है। पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मी.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव 10–15 दिनों के अन्तराल पर दो बार दवा बदल–बदल कर करें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई का उपयुक्त समय चल रहा है। किसान भाई प्राथमिकता देकर बुआई करें। खेत की जुताई में 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विषाल, सम्राट, एस0एम0एल0–668, एच0यू0एम0–16 एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद–19, पंत उरद–31, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुषंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु 20–25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु 30–35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30ग10 से0मी0 रखें।
- गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल में आवष्यकतानुसार निकाई–गुड़ाई करें। भिण्डी की छोटे–छोटे पौधों में कीट की निगरानी करें। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर मैलाथियान 50 ई0सी0 या डाइमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की छोटे–छोटे पौधों में लाल भृंग कीट की निगरानी करें। पौधों की प्रारंभिक अवस्था में इस कीट से फसल को काफी नुकसान होता है। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर पौधों पर सुबह में भुरकाव करने से इस कीट का आक्रमण कम हो जाता है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरोपायरीफास 2 प्रतिषत धूल दवा का 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिला देने से इस कीट षिषु नष्ट हो जातें है। पत्तियों पर डाइक्लोरवॉस 76 ई0सी0 का 1 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- ओल की फसल की बुआई करें। बुआई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुषंसित है। प्रत्येक 0.5 किलोग्राम के कन्द की रोपनी के लिए दूरी 75X75 से0 मी0 रखें। 0.5 किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करे। वीज दर 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें। बुआई से पूर्व प्रति गड्ढ़ा 3 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम युरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं 16 ग्राम पोटेषियम सल्फेट का व्यवहार करे। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के 5.0 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर 20–25 मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में 10–15 मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- आम के बगीचों में फल सरसों दाने के बराबर लगभग आ गया है। इस स्थिति में चुसक कीटों से बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड कीटनाषी दवा का 1.0 मि0ली0 दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से आम के फलों कीटों के प्रकोप से बचाया जा सकता है।
- फल को झड़ने से बचाने हेतु प्लेनोफिक्स नामक हार्मोन का 1.0 मि0ली0 प्रति तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, जिससे पौधों पर लगे फल को झरने से बचाया जा सकता है तथा फलों का आकर बढ़ने में भी सहायक होगा।

आज का अधिकतम तापमानः 34.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.5 डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 20.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.8 डिग्री अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी